सामाजिक विज्ञान

कक्षा 7 के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तक

0763

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
अप्रैल 2007 वैशाख 1929

पुनर्मुद्रण
नवंबर 2007 कार्तिक 1929
जनवरी 2009 माघ 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
जनवरी 2011 माघ 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
मार्च 2013 फाल्गुन 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
नवंबर 2014 अग्रहायण 1936
दिसंबर 2015 अग्रहायण 1937
जनवरी 2017 माघ 1938
दिसंबर 2017 पौष 1939
जनवरी 2019 पौष 1940
सितंबर 2019 भाद्रपद 1941

PD 80T RPS

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा गुड लक पब्लिशर्स लिमिटेड, डी–12, दिल्ली रोड, सहारनपुर 247 001 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-748-5

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 — **Phone : 011-26562708**

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बैंगलुरु 560 085 — **Phone : 080-26725740**

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 — **Phone : 079-27541446**

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप
पनिहटी
कोलकाता 700 114 — **Phone : 033-25530454**

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 — **Phone : 0361-2674869**

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*बिबाष कुमार दास*
सहायक संपादक	:	*शशि चड्डा*
उत्पादन सहायक	:	*ओमप्रकाश*

आवरण एवं सज्जा
ब्लू फिश

चित्र
मेहा गुप्ता, ब्लू फिश

कार्टोग्राफ़ी
कार्टोग्राफ़िक डिज़ाइन एजेंसी

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नये ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितनी वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद्, सामाजिक विज्ञान

पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन और इस पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार विभा पार्थसारथी की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री और सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति
हरि वासुदेवन, *प्रोफ़ेसर*, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुख्य सलाहकार
विभा पार्थसारथी, *प्रिंसिपल (अवकाश प्राप्त)*, सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली

सदस्य
अनिंदिता सरकार, *लेक्चरर*, मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
अंशु, *रीडर*, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
एकता सिंधु, *पी.जी.टी.*, इंडस पब्लिक स्कूल, रोहतक
मेहर सिंह, *पी.जी.टी.*, सेंट मेरी स्कूल, द्वारका
रेखा लोहान, *पी.जी.टी.*, मोतीलाल नेहरू स्कूल ऑफ स्पोर्टस, राई
श्यामला श्रीवत्स, टी.जी.टी., सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली
समिता दास गुप्ता, *पी.जी.टी.*, आनंदालय, आनंद, गुजरात

हिंदी अनुवाद
स्पेक्ट्रम कम्यूनिकेशंस, नयी दिल्ली

सदस्य-समन्वयक
तनु मलिक, *लेक्चरर*, सा.वि.मा.शि.वि., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद्, इस पुस्तक के विकास में सहयोग देने हेतु दौलत पटेल, *अध्यापिका (अवकाशप्राप्त)*, सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली; स्वागता बासु, *लेक्चरर,* एस.एस.वी. (पी.जी.) कॉलेज, हापुड़ एवं शिप्रा नॉयर, दार्जिलिंग का आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, वीर सिंह आर्य, *प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी (अवकाशप्राप्त)*, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार; एन.पी.सिंह, *रीडर,* एस.एस.वी. (पी.जी.) कॉलेज, हापुड़; दिनेश प्रताप सिंह, *रीडर एवं विभागाध्यक्ष,* डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून; नरेन्द्र डबास, *लेक्चरर,* एस.सी.ई.आर.टी., हरियाणा; अवधेश कुमार, *पी.जी.टी.,* केंद्रीय विद्यालय, जे.एन.यू. कैंपस, नयी दिल्ली; दीपक दहिया, *पी.जी.टी.,* राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय, न. 2, नयी दिल्ली एवं शंकर शरण, *लेक्चरर,* सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. का भी आभार व्यक्त करती है जिन्होंने अनुवाद के पुनरीक्षण हेतु अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

परिषद्, सविता सिन्हा, *प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष,* सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के प्रति भी अपनी कृतज्ञता अर्पित करती है, जिन्होंने प्रत्येक स्तर पर इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में अपना अमूल्य सहयोग दिया।

परिषद्, प्रस्तुत पुस्तक के निर्माण में निम्नोक्त सभी वैयक्तिक एवं संगठनों का आभार व्यक्त करती है जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक को सहज बनाने हेतु विभिन्न चित्र एवं अन्य पाठ्य सामग्री उपलब्ध करवाई:

अंशु, *रीडर,* किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली को चित्र 3.8, 6.2, 6.5, 6.6, 6.9, 6.10, 6.15, 7.7, 8.4, 8.5, 8.6, 8.11, 8.12 और 9.3 एवं पृष्ठ 14, 18, 55, 61, 62, 67 एवं 72 के चित्रों के लिए; सीमा माथुर, *रीडर,* श्री अरबिंदो कॉलेज (सांध्यकालीन), नयी दिल्ली को चित्र 6.7, 6.12, एवं 7.1 के लिए; आस्ट्रिया से कृष्ण श्योराण को चित्र 6.13(क), 7.2, 7.3, 7.5, एवं पृष्ठ 55 पर चित्र के लिए; गीतांजलि तहलान एवं परीक्षित तहलान, रोहतक को चित्र 5.3, 6.13 (ख) एवं पृष्ठ 15 एवं 61 के चित्रों के लिए; आर. पेलीसन, सहारा मेट को चित्र 9.1 के लिए; श्वेता उप्पल, एन.सी.ई.आर.टी. को चित्र 6.3, 7.4, 7.8, एवं पृष्ठ 1, 5 एवं 18 के चित्रों के लिए; कल्याण बैनर्जी, एन.सी.ई.आर.टी. को चित्र 6.1, 7.9, एवं पृष्ठ 18 के चित्रों के लिए; आई.टी.डी.सी./पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार को चित्र 3.9, 6.8, 7.6, 8.7, 8.9, 8.10, 8.13, 8.14, 9.5, 9.6 एवं पृष्ठ 9 एवं 76 के चित्रों के लिए;

डी.एम.डी/गृह मंत्रालय, भारत सरकार को चित्र 3.3 एवं पृष्ठ 25 एवं 35 के चित्रों के लिए; विस्तार निदेशालय, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार को पृष्ठ 48 के चित्र के लिए; ब्लूफिश को चित्र 6.1, 7.6 एवं पृष्ठ 9, 55, 61 के चित्रों के लिए; टाइम्स ऑफ इंडिया, नयी दिल्ली को पृष्ठ 21, 33 एवं 50 पर दिए गए समाचारों के लिए; सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक, कक्षा–7, भाग–2, एन.सी.ई.आर.टी. 2005 को 6.11, 8.3 के लिए तथा सेंटर ऑफ इनवायरनमैंटल एजुकेशन, अहमदाबाद को पृष्ठ 32 पर दिए गए क्रियाकलाप के लिए।

परिषद् पाठ्यपुस्तक के निर्माण में उल्लेखनीय सहयोग देने हेतु अनिल शर्मा एवं विजय कौशल, *डीटीपी ऑपरेटर*; नेहाल अहमद, अंजना बख्शी *कॉपी एडीटर*; उमेद सिंह गौड़ एवं शशि देवी *प्रूफ रीडर* तथा दिनेश कुमार, *कंप्यूटर इंचार्ज* का भी हार्दिक आभार व्यक्त करती है। इसी संदर्भ में प्रकाशन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. का सहयोग भी प्रशंसनीय है।

निम्नलिखित बिंदु इस पाठ्यपुस्तक में इस्तेमाल किए गए भारत के मानचित्रों के लिए लागू हैं

1. © भारत सरकार का प्रतिलिप्याधिकार, 2006
2. आन्तरिक विवरणों को सही दर्शाने का दायित्व प्रकाशक का है।
3. समुद्र में भारत का जलप्रदेश, उपयुक्त आधार-रेखा से मापे गये बारह समुद्री मील की दूरी तक है।
4. चण्डीगढ़, पंजाब और हरियाणा के प्रशासी मुख्यालय चण्डीगढ़ में है।
5. इस मानचित्र में अरुणाचल प्रदेश, असम और मेघालय के मध्य में दर्शायी गयी अंतर्राष्ट्रीय सीमायें, उत्तरी पूर्वी क्षेत्र (पुनर्गठन) अधिनियम 1971 के निर्वाचनानुसार दर्शित है, परंतु अभी सत्यापित होनी है।
6. भारत की बाह्य सीमायें तथा समुद्र तटीय रेखायें भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा सत्यापित अभिलेख/प्रधान प्रति से मेल खाती है।
7. इस मानचित्र में उत्तरांचल एवं उत्तरप्रदेश, झारखंड एवं बिहार और छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश के बीच की राज्य सीमायें संबंधित सरकारों द्वारा सत्यापित नहीं की गयी है।
8. इस मानचित्र में दर्शित नामों का अक्षरविन्यास विभिन्न सूत्रों द्वारा प्राप्त किया है।

विषय-सूची

एस. अमाल जेरी अर्थपुथराज, 10 वर्ष,
सेंट पैट्रिक मॉडर्न उच्च माध्यमिक विद्यालय, पुदुच्चेरी